# वानिकी हस्तक्षेप द्वारा सतत विकास और आजीविकापार्जन एक विकल्प पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन तथा ग्रामीणों को उपयोगी वानिकी प्रजातियों का वितरण पर रिपोर्ट

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा 17 फरवरी, 2022 को वानिकी हस्तक्षेप द्वारा सतत विकास और आजीविकापार्जन पर प्रदर्शन गाँव बड़ागाँव के हितकरों हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। इसमें बड़ागाँव तथा आसपास के 40 लोगों ने भाग लिया। बड़ागाँव रझाना पंचायत, जिला शिमला को संस्थान प्रदर्शन गाँव के रूप में विकसित कर रहा है। **डॉ. जगदीश सिंह, वैज्ञानिक-एफ**, प्रभागाध्यक्ष, विस्तार प्रभाग ने **डॉ॰ एस॰ एस॰ सामंत, निदेशक हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, श्रीमती रीना ठाकुर, प्रधान, श्री मुकुन्द मोहन शांडिल, उप प्रधान,** वार्ड सदस्यों सहित सभी उपस्थित लोगों का स्वागत किया एवं इस कार्यक्रम का उद्देश्य बताया। डॉ॰ सिंह ने बताया कि ग्रामीण वानिकी हस्तक्षेप से आजीविकापार्जन कर सकते हैं। पौधरोपण से भूक्षरण की रोकथाम होगी और ग्रामीणों के लिए चारा भी उपलब्ध होगा। उन्होनें बताया कि संस्थान मॉडल नर्सरी बड़ा गाँव शिमला में चारा पौधों की नर्सरी तैयार कर रहा है, जहां से ग्रामीण अपने खेत के आसपास चारा पौधों को पौधरोपण हेतु ले सकते हैं। गाँव में शामलात जमीन उपलब्ध होने पर उस क्षेत्र में लोगों के सहयोग से संस्थान चारा पौध बैंक विकसित करेगा, जिससे आने वाले समय में लोगों की चारा की जरूरत पूरी होगी।

**डॉ॰ एस॰ एस॰ सामंत, निदेशक** ने बताया कि वानिकी गतिविधियां गैर-वन सरकारी और निजी भूमि, किसानों के खेतों के किनारे, घरों के आसपास, सामुदायिक भूमि, बंजर भूमि और नालों के आसपास की जा सकती हैं। उन्होंने संस्थान द्वारा वानिकी शोध पर किए गए अनुसंधान एवं प्रशिक्षण कार्यों का भी उल्लेख किया। डॉ॰ सामंत ने हिमालयन क्षेत्र की पौध प्रजातियों पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला और कहा कि वन व जैव विविधता जीवन और पर्यावरण के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। उन्होंने बताया कि हिमालयन क्षेत्र जैव विविधता का भंडार हैं तथा यहाँ 10502 पौधों की प्रजातियाँ हैं, जिसमे से लगभग 4000 प्रजातियाँ महत्वपूर्ण हैं।

**डॉ. लाल सिंह, निदेशक,** हिमालयन रिसर्च ग्रूप-एनजीओ, ने चारे की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए तकनीकी हस्तक्षेप विषय पर महत्वपूर्ण जानकारी सांझा की। उन्होनें बताया कि सर्दियों के मौसम मे जब हरे चारे की कमी होती है तो ग्रामीण ***साइलेज*** बनाकर उस कमी को पूरा कर सकते हैं, जिसमें हरे चारे के पोषण गुण विद्यामान रहते हैं। **डॉ. मोनीश ठाकुर, वेटेरिनरी अधिकारी,** वेटेरिनरी हॉस्पिटल, हरचकियाँ, ज़िला-कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश ने गाय के लिए जरूरी पोषण, उनकी बीमारी में देखभाल, इलाज़ और दूध उत्पादन में वृद्धि हेतु पोषण महत्वता पर ग्रामीणों को बहुत ही उपयोगी व्यख्यान दिया। **डॉ॰ मनीश शर्मा, प्रोफेसर,** डॉ

वाई॰एस॰ परमार बागवानी एवं वानिकी, विश्वविद्यालय, नौणी सोलन ने सतत आय सृजन के लिए कृषि वानिकी प्रणाली में सब्जियों का एकीकरण और प्रबंधन विषय पर अपनी प्रस्तुति दी । **डॉ. जगदीश सिंह** ने समशीतोष्ण औषधियों पौधों की कृषिकरण तकनीक पर भी व्याख्यान दिया। उन्होनें कहा कि किसान, वृक्ष प्रजातियों के मध्य औषधियों पौधों जैसे कि कडु, वन-ककड़ी, चोरा, इत्यादि को उगागर अतिरिक्त आय अर्जित कर सकता हैं । **डॉ॰ संदीप शर्मा, वैज्ञानिक-जी एवं समूह समन्वयक अनुसंधान** ने 'गुणवत्ता रोपण स्टॉक उगाने हेतु आधुनिक नर्सरी तकनीकें' विषय पर जानकारी दी उन्होंने उच्च गुणवत्ता से तैयार नर्सरी पौधों की आवश्यकता पर ज़ोर दिया और कहा कि उच्च गुणवत्ता से तैयार पौधों से पौधरोपण से अधिक सफलता सुनिश्चित की जा सकती है।

**डॉ॰ वनीत जिश्टु, वैज्ञानिक** ने वानिकी हस्तक्षेपों के माध्यम से जल संरक्षण के उपाय विषय पर प्रस्तुति दी। **डॉ॰ प्रवीण रावत,** ने बांस नर्सरी विधि एवं इसके उपयोग पर व्यख्यान दिया। उन्होनें बताया कि वांस उगाने से स्थानीय लोग अपनी जरूरतें जैसे कि चारा, गैर अकाष्ठ उत्पाद, इत्यादि पूरी कर सकते हैं। नालों के किनारे वांस लगाने से मृदा अपरदन भी रोका जा सकता है। इस मौके पर संस्थान ने ग्रामीणों की मांग पर उन्हे 200 बांस तथा 100 बान के पौधे वितरित किए। **रीना ठाकुर, प्रधान** रझाना पंचायत ने संस्थान के निदेशक का उनकी पंचायत के लोगों को प्रशिक्षण देने हेतु धन्यवाद दिया। **श्री मुकुन्द मोहन, उप प्रधान** ने कहा कि संस्थान बड़ागाँव में विभिन गतिविधियां कर रहा है, जिसके लिए सभी ग्रामवासी संस्थान के आभारी हैं। प्रशिक्षण में उपस्थित समस्त ग्रामीणों नें कार्यक्रम को बहुत उपयोगी कहा। **डॉ॰ सामंत**, निदेशक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान ने आयोजन से जुड़े सभी लोगों के प्रयासों की सरहाना की तथा सभी वक्ताओं के योगदान को संक्षेप में बताते हुये उनका धन्यवाद दिया। कार्यक्रम के अंत मे **डॉ॰ जोगिंदर चौहान** ने संस्थान के निदेशक, सभी वक्ताओं, वैज्ञानिकों, अधिकारियों और कर्मचारियों और प्रतिभागियों का कार्यक्रम को सफल बनाने में योगदान देने के लिए धन्यवाद दिया।

## Distribution of Bamboo and Ban Oak Plants to Villagers of DV-Baragaon

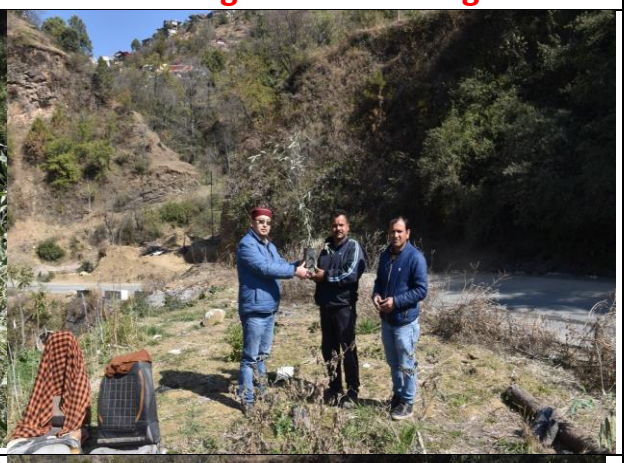

## Glimpses of Training Programme

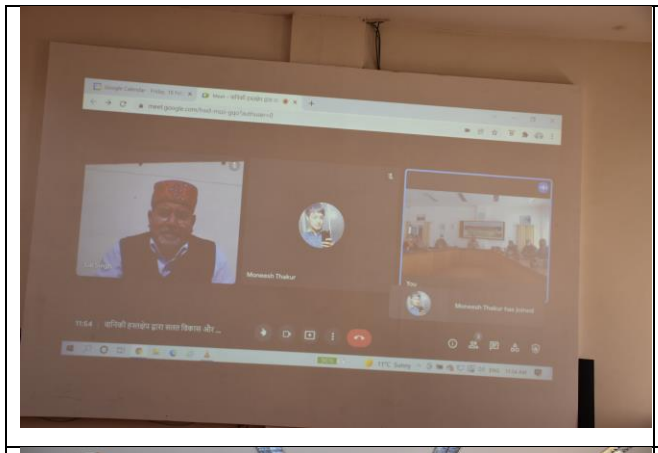
Monesh Thakur
You
Monesh Thakur has joined

HFRI

Needs:

Introduction
HFRI

"वानिकी हस्तक्षेप द्वारा सतत विकास तथा आजीविकोपार्जन"
पर
प्रदर्शन गांव बडागाँव, शिमला (हि.प्र.) के लिए
स्थान : सम्मेलन कक्ष, हि.व.अ.स. - शिमला (हि.प्र.)
11 फरवरी, 2022
कोनिफर कैम्पस, पंथाघाटी,

"वानिकी हस्तक्षेप द्वारा सतत विकास तथा आजीविकोपार्जन"
पर
प्रदर्शन गांव बडागाँव, शिमला (हि.प्र.) के लिए
स्थान : सम्मेलन कक्ष, हि.व.अ.स. - शिमला (हि.प्र.)
11 फरवरी, 2022
कोनिफर कैम्पस, पंथाघाटी,

"वानिकी हस्तक्षेप द्वारा सतत विकास तथा आजीविकोपार्जन"
पर
प्रदर्शन गांव बडागाँव, शिमला (हि.प्र.) के लिए
स्थान : सम्मेलन कक्ष, हि.व.अ.स. - शिमला (हि.प्र.)
11 फरवरी, 2022
कोनिफर कैम्पस, पंथाघाटी,

"वानिकी हस्तक्षेप द्वारा सतत विकास तथा आजीविकापार्जन"
पर
प्रदर्शन गांव बड़ागाँव, शिमला (हि.प्र.) के हितकरों हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम

"वानिकी हस्तक्षेप द्वारा सतत विकास तथा आजीविकापार्जन"
पर

"वानिकी हस्तक्षेप द्वारा सतत विकास तथा आजीविकापार्जन"
पर
प्रदर्शन गांव बड़ागाँव, शिमला (हि.प्र.) के हितकरों हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम

हि.व.अ.सं.
HFRI